5 दिसम्बर 2022
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

मालवा - निमाड़ के श्रद्धा-आफ़ताब

दिल्ली में हुआ श्रद्धा मर्डर केस, मात्र एक मर्डर नही है। बल्कि देश में नित्य होती हजारों घटनाओं में से एक है।
मालवा निमाड़ में भी लव जिहाद बड़ी संख्या में हो रहा है।
मालवा निमाड़ में फैलते लव जिहाद के बारे में पढ़िए जाग्रत मालवा के इस अंक में

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 दिसम्बर 2022 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 02 अंक : 05
•••
पौष/ कृष्ण
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी–1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731–3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए–11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी–1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731–3551341

अपनी बात

ॐ

प्रेम से श्रद्धा उत्पन्न होती है और श्रद्धा विश्वास को जन्म देती है। लेकिन जब प्रेम की आड़ में जिहाद छुपा हो तो श्रद्धा के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। जिहाद वह सब कुछ कर करता है जो प्रेम में वर्जित है। ताजा उदाहरण श्रद्धा और आफताब का हमारे सामने है। सीधी-साधी, भोली-भाली लड़कियों को प्रलोभन देकर, झूठे सपने दिखाकर अपने प्रेम जाल में फंसाकर उन्हें धर्म-परिवर्तन के लिए बाध्य करना और ऐसा नहीं करने पर यातनाएं देना, यहां तक कि हत्या कर देना, इसके कई उदाहरण हमारे सामने हैं। घटना जब तक ताजी रहती है तब तक उस पर चर्चाएं होती हैं और फिर कोई नई घटना घट जाती है। चर्चाएं बहुत हो चुकीं अब इसका निदान क्या हो सकता है इस पर विचार होना चाहिए। सिर्फ कानून बनाना इस समस्या का हल नहीं हो सकता इसके लिए तो समाज को जागृत करना होगा। आज नाम बदलकर, रूप बदलकर कई लड़के सड़कों पर घूम रहे हैं, उनकी पहचान करनी होगी। उनसे हमारे घर की बहन-बेटियों को बचाना होगा और उन्हें ऐसा प्रशिक्षण व संस्कार देने होंगे कि वह इन कालनेमियों को पहचान सकें। पूरे समाज को सजग रहने की आवश्यकता है। वैसे तो जिहाद के कई प्रकार हैं सभी पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यह सब प्रायोजित योजना के अंतर्गत हो रहा है, इसकी जड़ तक पहुंचना होगा और उस जड़ में ही मट्ठा डालना होगा। अगर सरल शब्दों में समझें तो लव जिहाद मुस्लिम पुरुषों द्वारा गैर-मुस्लिम समुदाय से जुड़ी महिलाओं को इस्लाम धर्म में परिवर्तित कराने के लिए प्रेम का ढोंग रचना है। लव जिहाद एक सोची समझी साजिश और इस्लाम का फैलाया हुआ जाल है जिसमें हिंदू लड़कियों को झूठे हिंदू नाम रखकर बहलाकर, दबाव देकर, अपहरण करके मुस्लिम लड़के उनसे शादी का ढोंग करते हैं और फिर उनका धर्म परिवर्तन करते हैं, उनको घोर यातनाएं देते हैं। जब लड़की इसका प्रतिरोध करती है तो उसकी हत्या कर, उसके टुकड़े-टुकड़े कर सूटकेस में भर दी जाती है या आफताब की तरह उसके टुकड़ों को फ्रिज में रखकर अलग-अलग स्थानों पर फेंक दिया जाता है। इस मामले में हिंदू लड़कियों को और हिंदू परिवारों को सावधानी रखने की आवश्यकता है। किसी भी अनजान लड़के से ज्यादा दोस्ती नहीं बढ़ाना चाहिये न ही उसे अपने घर पर बुलाना चाहिये। कारणवश बुलाना भी पड़े तो लड़कियों और महिलाओं को उससे सावधान रहना अति आवश्यक है।

मालवा निमाड़ के श्रद्धा आफताब

अमन व्यास

श्रद्धा नाम की हिन्दू लड़की की उसके मुस्लिम प्रेमी आफताब ने हत्या कर दी, इस नृशंस हत्या में आफताब ने श्रद्धा के 35 टुकड़े किये और प्रतिदिन आधी रात के बाद वो टुकड़ों को दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में फेंकता। मीडिया में आया कि श्रद्धा और आफताब लिव इन में साथ रह रहे थे लेकिन श्रद्धा द्वारा शादी की बात करने पर आफताब उसे टाल देता और श्रद्धा के बार-बार शादी की जिद करने पर उसने श्रद्धा की हत्या कर दी।

लेकिन विचारणीय है कि शादी के बाद भी पति-पत्नी को साथ नहीं रहना होता है तो वे तलाक कर लेते हैं, लेकिन आफताब के साथ ऐसा क्या था कि उसने श्रद्धा को मना नहीं किया बल्कि उसका मर्डर किया।

इसके लिए आपको आफताब जैसे अगणित लड़कों की मानसिकता को समझना पड़ेगा।

आफताब, श्रद्धा से प्रेम नहीं करता था, प्रेम के नाम पर एक षड्यंत्र कर रहा था। ऐसे अगणित मुस्लिम लड़के हैं जिनके मन में यह डाला जाता है कि हिन्दू लड़की को किसी भी तरह अपने प्रेम में फंसाया जाया जाए, उसके जीवन को बर्बाद किया जाये।

क्योंकि संयोग होता तो केवल एक खबर ही होती, लेकिन नित्य देश के कितने ही हिस्सों में लव-जिहाद के मामले सामने आते हैं। केवल मालवा-निमाड़ के पिछले कुछ समय में घटे मामलों को ही पढ़ लीजिये, आप प्रेम के नाम पर होते षड्यन्त्रों को कुछ तो समझ ही जायेंगे।

इंदौर - इंदौर में रूबी नाम की महिला ने अपनी महिला दोस्त की एक जिम ट्रेनर का गब्बर नाम बताकर दोस्ती करवाई, मित्रता, प्रेम में बदल गई और गब्बर तथा महिला ने शादी कर ली। जब महिला गर्भवती हुई तो उसे विभिन्न जांचों के लिए अस्पताल जाना पड़ता, वहां उसके पति के पहचान पत्र भी मांगे जाते, गब्बर हमेशा किसी बहाने से पहचान पत्र देने की बात को टाल देता, लेकिन जब एक विशेष जांच में पति का पहचान पत्र अनिवार्य हो गया और गब्बर के लिए भी उसे देना जरूरी हो गया **तो पहचान पत्र पर अपने पति का गब्बर की जगह मुस्तफा नाम देखकर महिला के पैरों तले से जमीन खिसक गई।**

महिला ने जब अपने साथ हुए धोखे पर पुलिस के पास जाने का सोचा तो उसे जान से मारने की धमकियाँ दी जाने लगीं। महिला साहस कर सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं के पास गई तब जाकर मुस्तफा पर प्रकरण दर्ज हो पाया।

उज्जैन- उज्जैन में शाकिब ने हिंदू लड़की के नाम से आईडी बनाकर, एक हिन्दू लड़की को इंस्टाग्राम पर फॉलो रिक्वेस्ट भेजी। लड़की ने रिक्वेस्ट एक्सेप्ट कर ली। दोनों चैटिंग करने लगे। एक-डेढ़ महीने बात करने के बाद उसने बताया कि वह लड़का है और हिन्दू है, जब लड़की को लड़के से बात करने की आदत हो गई तो उस लड़के ने बताया कि वह मुसलमान है। ऑनलाइन दोस्ती होने पर लड़के ने लड़की को उज्जैन के टावर चौक पर मिलने बुलाया। यहां से उसे मैजिक में बैठाकर आगर रोड नाका ले गया। यहां दोस्त के सुनसान मकान में लड़की से दुष्कर्म किया। घटना के बाद लड़की

जब महिला को एक बालक हुआ तब उसको सच पता चला, महिला कहीं की नहीं रही, उस पर लड़के का परिवार मांस खाने और मुस्लिम बनने का दबाव बनाने लगा।

को फोन लगाकर कहा कि तेरा विडियो बना लिया है। अगर तू मुझसे नहीं मिलेगी तो इसे वायरल कर दूंगा। बाद में सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से लड़की ने प्रकरण दर्ज करवाया।

बड़वानी - बड़वानी के पानसेमल में जनजातीय वर्ग की एक लड़की से करीम ने करण बनकर दोस्ती की, फिर उसे घुमाने के बहाने इंदौर लाया और ग्यारह दिन तक लड़की के साथ दुष्कर्म किया।

जब लड़की को पता चला कि करण तो वास्तविकता में करीम है तब वो इंदौर से पानसेमल आयी, परिवार को बात बताई और करीम के विरुद्ध प्रकरण दर्ज हुआ।

रतलाम - रतलाम के एक पार्क में एक व्यक्ति एक महिला को मार रहा था वहां आसपास के लोगो ने बीच -बचाव किया और फिर पुलिस आई, बात थाने तक पहुंची तो पता चला कि मामला आपसी लड़ाई का नही लव जिहाद का है।

दरअसल रतलाम की यह महिला पहले से ही शादीशुदा थी और इसकी अपने ससुराल में लड़ाई हो जाने के कारण ये अलग रह रही थी। इसी समय इस महिला कि मित्रता खाचरोद के शेख अली से हो गई थी, दोनो पति पत्नी की तरह साथ रहने लगे और एक वर्ष बाद ही शेख, इस हिंदू महिला को नमाज पढ़ने और मुस्लिम बनने के लिए कहने लगा, दबाव बनाने लगा।

पार्क में भी महिला को मारने का कारण यही था कि वो महिला का शोषण और उस पर जबरदस्ती कर रहा था और महिला साथ नही रहना चाह रही थी।

शाजापुर - शाजापुर में मुस्लिम ने हिन्दू बनकर एक हिन्दू लड़की को प्रेम के जाल में फंसाया,

मालवा निमाड़ में नेमावर से नीमच तक, बड़नगर से बड़वाह तक सब ओर नित्यप्रति लव जिहाद की घटनाएं सामने आ रही हैं, कही आसिफ, अमन बन रहा तो कही फरजान, रवि बनकर हिन्दू लड़की को अपने जाल में फंसा रहा है। कही मांस खाने को दबाव बनाया जा रहा तो कहीं मुस्लिम बनने को, कहीं लड़की की हत्या की जा रही तो कहीं गर्भपात। कानूनों के बनने और सोशल मीडिया के कारण आज ये कुछ मामले हमारे सामने हैं, लेकिन इनसे कहीं अधिक लव-जिहाद के प्रकरण आज भी दबे हुए हैं। कितनी ही पिंकी, शालू आज शहबानों या तबस्सुम होकर अपना भाग्य मानकर प्रताड़नाएं सह रही हैं, लहसुन की गंध से घबराने वाली कई हिन्दू लड़कियां आज मांस पका रही हैं।

श्रद्धा अकेली नहीं है, हर शहर में एक श्रद्धा है, जो किसी झांसे में आकर किसी आफताब के प्रेम में पड़ गई और अपने या अपने सुख के कई टुकड़े करवा लिए।

आज भी कई श्रद्धाएं हैं जो आफताबों के चक्कर में हैं, उन्हें बताइए तुम किसी के लिए प्रेम नहीं शिकार भर हो, अपने घर की बच्चियों को आगे बढ़ने से मत रोकिये पर उन्हें दुनिया में उनके विरुद्ध सुनियोजित ढंग से चल रहे इन षड्यंत्रों के बारे में बताइये, ताकि अपने घर में, अपने परिचितों में,अपने गाँव में, अपने नगर में, अपने देश में भविष्य में किसी श्रद्धा के टुकड़े-टुकड़े होने से बच जाये।

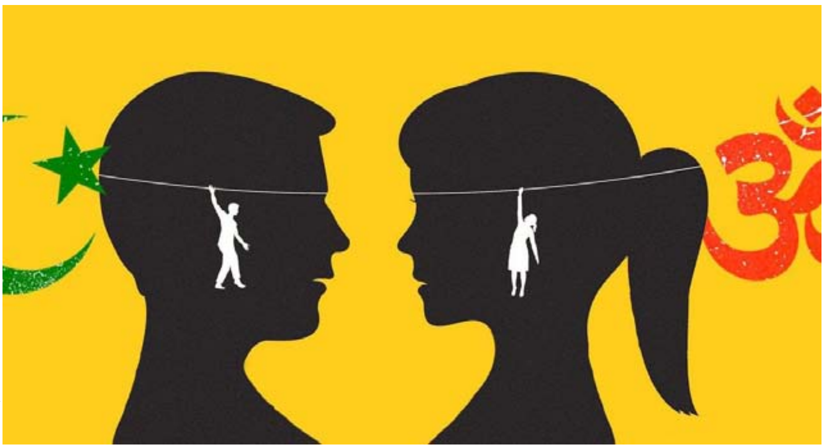

पेसा कानून को समझिये

मध्यप्रदेश में पेसा एक्ट लागू हो गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की उपस्थिति में शहडोल में आयोजित जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में जनजातीय समुदाय के हित में पेसा एक्ट को लागू किया गया है। इस कानून का उद्देश्य जनजातीय समाज को स्वशासन प्रदान करने के साथ ही ग्रामसभाओं को सभी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बनाना है। आसान भाषा में जानिये पेसा कानून से अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में प्राप्त होने वाले अधिकारों के बारे में

❖ **जमीन का अधिकार** - पेसा कानून के प्रावधान के अनुसार, हर साल गांव की जमीन, उसका नक्शा, वनक्षेत्र का नक्शा, खसरे की नकल, पटवारी को या बीट गार्ड को गांव में लाकर ग्रामसभा को दिखानी होगी। ताकि जमीनों में हेर-फेर न हो। नामों में गलती है तो यह ग्रामसभा को उसे ठीक कराने का अधिकार होगा। किसी भी प्रोजेक्ट, बांध या किसी काम के लिए अब ग्राम सभा की अनुमति के बिना जमीन नहीं ली जा सकेगी। पेसा कानून के जरिये ग्राम सभाओं को और अधिक अधिकार मिले हैं।

गैर जनजातीय व्यक्ति या कोई भी अन्य व्यक्ति छल-कपट से, बहला-फुसलाकर, विवाह करके जनजातीय भाई-बहनों की जमीन पर गलत तरीके से कब्जा करने या खरीदने की कोशिश करें तो ग्राम सभा इसमें हस्तक्षेप कर सकेगी और जमीन का कब्जा फिर से जनजातीय भाई-बहनों को दिलवाएगी। अधिसूचित क्षेत्रों में ग्राम सभा की अनुशंसा के बिना खनिज के सर्वे, पट्टा देने या नीलामी की कार्यवाही नहीं हो सकेगी।

❖ **जल का अधिकार**- पेसा के द्वारा गांव में तालाबों का प्रबंध अब ग्राम सभा करेगी। आप चाहें सिंघाड़े लगाएं, आप चाहें मछली पालें इनसे जो आय होगी, वह भी गांव के भाई-बहनों को प्राप्त होगी। इसका मतलब यह है कि ग्राम सभा तालाब/जलाशय में मछली पालन और सिंघाड़ा उत्पादन आदि गतिविधियां कर सकती है। इससे होने वाली आमदनी ग्राम सभा को मिलेगी। तालाब में किसी भी प्रकार की गंदगी, कचरा, सीवेज आदि जमा न हो, प्रदूषित न हो, इसके लिए ग्राम सभा किसी भी प्रकार के प्रदूषण को रोकने के लिए कार्यवाही कर सकेगी। 100 एकड़ तक कि सिंचाई क्षमता के तालाब और जलाशय का प्रबंधन संबंधित ग्राम पंचायत द्वारा किया जाएगा।

❖ **जंगल का अधिकार** - पेसा कानून के प्रावधान के अंतर्गत तेंदुपत्ता तोड़ने और बेचने का अधिकार भी ग्राम सभाओं को दिया जाएगा। गांव में मनरेगा और अन्य कामों के लिए आने वाले धन से कौन सा काम किया जायेगा, इसे पंचायत सचिव नहीं बल्कि ग्राम सभा तय करेगी। इसका मतलब है कि ग्राम सभा अपने क्षेत्र में स्वयं या एक समिति गठित कर वनोपजों जैसे अचार गुठली, करंज बीज, महुआ, लाख, गोंद, हर्रा, बहेरा, आंवला आदि का संग्रहण, मार्केटिंग, मूल्य तय करना और बिक्री कर सकेंगे। एक से अधिक ग्राम सभा भी मिलकर यह काम कर सकती है। अभी तक या तो सरकार या फिर व्यापारी लघु वनोपजों का मूल्य तय किया करते है लेकिन अब रेट कंट्रोल की कमांड ग्राम सभा के माध्यम से हमारे जनजातीय भाई-बहनों के हाथ में होगी।

❖ **श्रमिकों के अधिकारों के संरक्षण का अधिकार** - मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पेसा के बारे में बताते हुए कहा कि गांव में कुछ एजेंट आते हैं। काम के लिए ले जाने की बात करते हैं। बाद में हमारे बेटे-बेटियां दिक्कत में फंस जाती हैं। पेसा के नियम आपको अधिकार दे रहे हैं कि हमारे गांव से कोई बेटा-बेटी जाएगा तो ले जाने वाले को पहले ग्राम सभा को बताना होगा। ले जाने वाला कौन है, कहां ले जा रहा है, यह भी उसे बताना होगा। ताकि जरूरत के वक्त उनकी मदद हो सकें, बिना बताए ले जाने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। ग्राम सभा के पास काम के लिए बाहर जाने वाले सभी लोगों की सूची रहेगी। काम के लिए अपने गांव से ग्राम सभा को बिना बताए जाने को नियमों का उल्लंघन माना जाएगा।

❖ **परंपराओं को बचाने का अधिकार**- शराब की नई दुकानें बिना ग्रामसभा की अनुमति के नहीं खुलेंगी। शराब या भांग की दुकान हटाने की अनुशंसा का अधिकार भी ग्राम सभा को होगा। यदि 45 दिन में ग्राम सभा कोई निर्णय नहीं करती है, यह मान लिया जाएगा कि नई दुकान खोलने के लिए ग्राम सभा सहमत नहीं है। फिर दुकान नहीं खोली जाएगी। ग्राम सभा किसी स्थानीय त्यौहार के अवसर पर उस दिन पूरे दिन के लिए या कुछ समय के लिए शराब दुकान बंद करने की अनुशंसा कलेक्टर से कर सकती है। एक वर्ष में कलेक्टर चार ड्राय डे के अंतर्गत दुकान को बंद कर सकेंगे। पेसा कानुन के संबंध में कुछ सवालों के जवाब अगले अंक में मिलेगें।

वीर टंट्या मामा भील
बलिदान दिवस 4 दिसम्बर

टंट्या मामा का जन्म मध्यप्रदेश के पश्चिम निमाड़ जिले के बिरदा गाँव में एक भील परिवार में हुआ था। उनके पिता भावसिंह व माता जीवणी थे।

मात्र 25 साल की उम्र में ही वह विद्रोही हो गये थे उन्होंने अंग्रेज चापलूसों को समाप्त करने का संकल्प लिया और पहली कार्यवाही निमाड़ के पोखर गाँव में की। अंग्रेजों ने टंट्या, बिझुनिया और दीपिया को धोखे से गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। वहाँ से टंट्या मामा अपने साथियों सहित भाग निकले और फिर अंग्रेजों के खिलाफ जनजातीय समाज के लोगों की छोटी -छोटी टोलियाँ बनाकर संघर्ष करते रहे और गरीब असहाय लोगों की सहायता करते रहे। जहाँ भी किसी गरीब जनजातीय भील, भिलाला व अन्य समाज की बहू-बेटियों से जोर -जबरजस्ती होती वे उनकी लाज बचाने तुरंत वहाँ पहुँच जाते थे और अत्याचारियों को सजा देते थे। इससे माताओं-बहिनों को यह विश्वास हो गया था कि यदि हम पर कोई अत्याचार होगा तो टंट्या हमें बचाने अवश्य आयेगा वे टंट्या को अपना भाई मानती थीं, ऐसा भाई जो हर मुसीबत में उनकी सहायता करता है।

इसी कारण टंट्या को क्षेत्र में टंट्या मामा के नाम से जाना-पहिचाना जाने लगा। टंट्या सबका मामा है, वह सबकी रक्षा करता है, वह तो देवता है, हमारी हर समय रक्षा करता है। वह सबका लोकदेवता बन गया था। इसीलिए आज भी निमाड़ में टंट्या मामा को लोकदेवता के नाम से पूजा जाता है।

टंट्या मामा का प्रभाव जनजाति समाज के मानस पर इतना गहरा है कि आज हर भील जनजाति समाज के भाई अपने आपको मामा कहलाने में गौरव का अनुभव करते हैं। वे गर्व करते हैं कि हम टंट्या मामा के वंशज हैं।

1880 में टंट्या मामा के दो मुख्य साथियों दीपिया और बिझुरिया को गिरफ्तार कर जबलपुर सेंट्रल जेल में बंद कर दिया गया। दीपिया जेल से भाग गया, बौखलाये अंग्रेजों ने बिझुरिया को सरेआम एक पेड़ से फाँसी से लटका दिया और लाश को उसी तरह छोड़ दिया गया ताकि खौफ फैले। पर क्रांति रुकी नहीं, चलती रही, बाद में जब दीपिया भी पकड़ में आया तो उसे कालापानी की सजा दी गई।

अंग्रेजों ने क्रांतिवीर टंट्या मामा को भी धोखे से पकड़कर जेल में डाल दिया और 4 दिसंबर 1889 में जबलपुर सेंट्रल जेल में उन्हें फाँसी दी गई।

टंट्या मामा के बलिदान ने संपूर्ण संपूर्ण भील व अन्य जनजाति समाज के दिलों में उनके प्रति अगाध श्रद्धा भर दी और वे भीलों के भगवान हो गये।

लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रेरित करती है गीता...

हिंदू पंचांग के अनुसार प्रत्येक वर्ष मार्गशीर्ष माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी को गीता जयंती मनाई जाती है। बताया जाता है कि इसी दिन भगवान श्री कृष्ण के मुख से गीता के उपदेश निकले थे। पूरे विश्व भर में मात्र श्रीमद् भगवद् गीता ही एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जिसकी जयंती मनाई जाती है। इस वर्ष गीता जयंती महोत्सव (मोक्षदा एकादशी) 3 दिसंबर 2022 को शनिवार के दिन है।

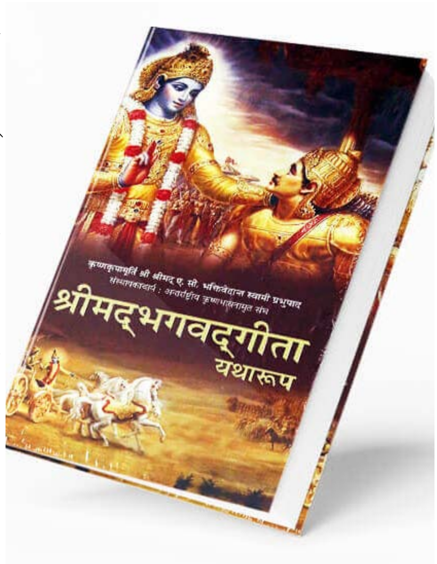

हिन्दू धर्म का पवित्र ग्रंथ श्रीमद् भगवद् गीता भारत के महान महाकाव्य महाभारत का एक छोटा अंग है। महाभारत प्राचीन भारत के इतिहास की एक गाथा है जिसमें मानव जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों को बहुत ही विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। महाभारत लगभग 110000 श्लोकों के साथ विश्व के महाकाव्य ग्रंथों इलियड और ओडिसी संयुक्त से सात गुना और बाइबल से तीन गुना बढ़ी है। वास्तव में, यह कई गाथाओं का एक पूरा पुस्तकालय है। महाकाव्य की छठी पुस्तक में पांडवों और कौरवों के बीच महान लड़ाई से ठीक पहले की घटना श्रीमद् भगवद् गीता का कथानक है।

श्रीमद् भगवद् गीता हिंदू धर्म की सबसे लोकप्रिय पुस्तकों में से एक है, जो विश्व भर के लाखों लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत है। मूलतः संस्कृत भाषा में लिखी गई गीता में 700 श्लोक हैं। कुरुक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुन के सारथी बने भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें मोह में फंसता देख उनके कर्म और कर्तव्य से अवगत कराया और जीवन की वास्तविकता से उनका सामना करवाया उन्होंने अर्जुन की सभी शंकाओं को दूर किया उनके बीच हुआ यह संवाद ही श्रीमद् भगवद् गीता है। जो आज भी लोगों को सही-गलत में फर्क समझने एवं जीवन को ठीक तरीके से जीने का तरीका सिखाती है। पौराणिक मान्यताओं और विद्वानों की कालगणना के अनुसार भगवान कृष्ण ने गीता 5160 वर्ष पूर्व मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था।

दुनिया की महान विभूतियों द्वारा प्रायः गीता का उल्लेख किया जाता है। इन महान हस्तियों का मानना है कि गीता के माध्यम उन्हें अपने जीवन में मार्गदर्शन मिलता है। श्रीमद् भगवद् गीता ने अनगिनत लोगों को प्रेरणा दी है और उनके जीवन को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी प्रेरणा का परिणाम है कि श्रीमद् भगवद् गीता को 80 भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है। सामान्यतया गीता को जीवन जीने मार्ग दिखाने की सीख देने वाले धार्मिक ग्रंथ के रूप में जाना जाता है। किन्तु वह अब केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में ही नहीं देखी जाती है, बल्कि वह कई मंचों पर दर्शनशास्त्र और उच्च प्रबंधन का हिस्सा बन गई है। श्रीमद् भगवद् गीता की लोकप्रियता का परिणाम है कि वह भारत की सीमाओं से परे अपनी लोकप्रियता के झंडे गाढ़ चुकी है, वह विश्व के सभी प्रमुख देशों में लोकप्रिय है। श्रीमद् भगवद् गीता ने दुनिया के कई महान और प्रसिद्ध लोगों को न केवल प्रभावित किया है बल्कि उनके जीवन को भी पूरी तरह से बदल दिया।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

www.jagratmalwa.com

बलिदानी महात्मा स्वामी श्रद्धानंद

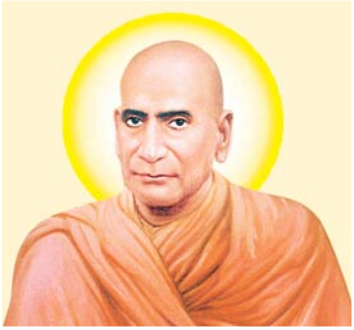

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती आधुनिक भारत में हिन्दुत्व के प्रखर नक्षत्र, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, शिक्षाविद् तथा आर्य समाज के सन्यासी थे। जिन्होंने स्वामी दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं का प्रचार किया तथा 'स्व' की अलख जगाए रखी। अपना जीवन स्वराज्य, स्वाधीनता, शिक्षा तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय जैसी शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण किया तो वहीं शुद्धि आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती का जन्म 22 फरवरी सन् 1856 को पंजाब प्रांत के जालंधर जिले के तलवान ग्राम में हुआ था। उनका मूल नाम मुंशीराम विज था, उनके पिता नानक चंद विज थे। स्वामी दयानंद सरस्वती के तर्कों और आशीर्वाद से मुंशीराम विज ने अपने आप को वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बनाया। स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती एक कुशल अधिवक्ता थे, परंतु महर्षि दयानंद के स्वर्गवास के उपरांत उन्होंने स्व -देश, स्व-संस्कृति, स्व-समाज, स्व-भाषा, स्व-शिक्षा, नारी कल्याण, दलितोत्थान, स्वदेशी प्रचार, वेदोत्थान, पाखंड-खंडन, अंधविश्वास उन्मूलन, स्व-धर्म उत्थान जैसे कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। वैवाहिक जीवन से मुक्त होकर सन्यास धारण कर लिया। पत्रकारिता और हिंदी सेवा में भी उनका अग्रणी स्थान रहा है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामी श्रद्धानंद ने कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को जब मुस्लिम तुष्टिकरण की घातक नीति को अपनाते हुए देखा तो, उन्होंने शुद्धि आंदोलन चलाया। यह आंदोलन कट्टरपंथी मुस्लिम और ईसाई हिन्दुओं को धर्मांतरण कराने वाले षड्यंत्रों के विरुद्ध मोर्चा था। हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की आधारशिला रखने वाले स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती ही हैं। मदन मोहन मालवीय और जगन्नाथ पुरी के शंकराचार्य स्वामी भारती कृष्णतीर्थ को गुरुकुल में आमंत्रित करके उनके प्रवचन कराए। स्वामी श्रद्धानंद ने इस्लाम एवं ईसाई मत से संबंधित अंध विश्वासों का खंडन किया तथा छुआछूत की समस्या को दूर करने के भगीरथ प्रयास किए। उन्होंने बताया कि यह सबसे बड़ा कलंक है। स्वामी श्रद्धानंद के समर्पण और सफलता को देखते हुए, इस्लामिक चरमपंथियों ने उनके विरुद्ध षड्यंत्र किया और अब्दुल रशीद जैसे व्यक्ति को तैयार कर उनकी हत्या करवा दी।

वनवासी सशक्तिकरण केंद्र बड़ा घोंसलिया मेघनगर, झाबुआ

बड़ा घोंसलिया केंद्र स्वावलंबन की दृष्टि से एक सशक्त केंद्र बनकर उभरा है। समाज के जनजातीय वर्ग के समग्र विकास हेतु यह केंद्र वर्ष 2015 से भैया जी दाणी सेवा न्यास एवं सेवा भारती इंदौर के सहयोग से अविरत संचालित किया जा रहा है। ग्रामीण वर्ग, गाँवो में ही रहकर स्वावलंबी बने, इसके लिए युवकों व महिलाओं को स्थानीय संसाधनों से रोजगार सृजन हेतु स्वावलंबन की अनेकों गतिविधियां यहाँ वर्ष भर चलती हैं।

जैविक कृषि व नर्सरी निर्माण प्रशिक्षण - वनवासी व ग्रामीण क्षेत्र के किसानों को रसायन मुक्त उत्तम गुणवत्ता उत्पादन हेतु प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन किया जाता है। जैविक फल-फूल , सब्जी, फसल व औषधियों के उन्नत उत्पादन हेतु प्रकल्प में मॉडल तैयार किए गए हैं। फलदार वृक्षों से वनवासी बन्धु अपना जीविकोपार्जन कर सकें इस उद्देश्य से 2 लाख पौधों की समृद्धि पौधशाला (नर्सरी) विकसित की गई है जहाँ से यह पौधे वनवासियों को प्रदान किए जाते हैं। साथ ही नर्सरी विकसित करने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

गौ संवर्द्धन तथा पंचगव्य उत्पादन - विभिन्न प्रकार की जैविक खाद, मटका खाद, गोबर गैस, इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण, निर्माण व विक्रय किया जाता है।

कौशल विकास केंद्र - युवाओं को लाइट व नल फिटिंग प्रशिक्षण, मोबाईल व मोटरसाइकिल रिपेयरिंग प्रशिक्षण, कंप्यूटर प्रशिक्षण, वाहन (चार पहिया) चालक प्रशिक्षण दिया जाता है।

महिला सशक्तिकरण - महिलाओं के लिए मेहंदी, ब्यूटीपार्लर, सिलाई व स्वदेशी राखी व झालर (सीरीज) निर्माण प्रशिक्षण, गणेश प्रतिमा व स्वदेशी रंग निर्माण प्रशिक्षण प्रशिक्षण भी समय समय पर दिया जाता है।

वीर बाल दिवस : धर्म के लिए बलिदान को सच्चा नमन

वीर बाल दिवस हर साल 26 दिसंबर को मनाने की घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की है, जो कि गुरु गोविंद सिंह के चार छोटे साहिबजादों के बलिदान की याद में मनाया जाएगा।

20 दिसंबर, 1704 का वह दिन - गुरु गोविंद सिंह, जो कि सिखों के दसवें गुरु थे, उन्हें वर्ष 1704 में 20 दिसंबर को आनंदपुर साहिब किले को अचानक से बेहद कड़कड़ाती ठंड में छोड़ना पड़ा था, क्योंकि मुगल सेना ने इस पर आक्रमण कर दिया था। गुरु गोविंद सिंह चाहते थे कि वे किले में ही रुक कर आक्रमणकारियों के छक्के छुड़ा दें, लेकिन उनके दल में जो सिख शामिल थे, उन्होंने खतरे को भांप लिया था। ऐसे में उन्होंने गुरु गोविंद सिंह से आग्रह किया कि इस वक्त यहां से निकल जाना ही उचित होगा। गुरु गोविंद सिंह ने आखिरकार उनकी बात मान ली और आनंदपुर किले को छोड़कर वे अपने परिवार के साथ वहां से निकल गए।

बिछड़ गया गुरु गोविंद सिंह का परिवार - सरसा नदी को जब वे पार कर रहे थे, तो इस दौरान नदी में पानी का बहाव बहुत तेज होने की वजह से गुरु गोविंद सिंह के परिवार के सदस्य एक-दूसरे से बिछड़ गए थे। गुरु गोविंद सिंह के दो बड़े बेटे अजीत सिंह और जुझार सिंह उनके साथ ही रह गए और वे उनके साथ चमकौर पहुंच गए थे। वहीं, दूसरी ओर गुरु गोविंद सिंह की माता गुजरी और उनके दो बेटे जोरावर सिंह और फतेह सिंह अलग हो गए थे। गुरु गोविंद सिंह का सेवक गंगू इन्हीं लोगों के साथ में था। उसने माता गुजरी और गुरु गोविंद सिंह के दोनों बेटों को उनके परिवार से मिलाने का भरोसा दिलाया और उन्हें अपने घर लेकर चला गया। गंगू को सोने के मोहरों का लोभ हो गया था। इस वजह से उसने वजीर खां को इनके बारे में खबर कर दी।

गिरफ्तार हो गए गुरु गोविंद सिंह के दो साहिबजादे -इसके बाद वजीर खां के सैनिकों ने माता गुजरी और 7 साल के जोरावर सिंह और 5 साल के फतेह सिंह को गिरफ्तार कर लिया। सबसे पहले तो उन्होंने इन सभी को बहुत ही ठंडे बुर्ज में रखा। इसके बाद वजीर खां के सामने जब इन दोनों को पेश किया गया तो वजीर खान ने गुरु गोविंद सिंह के दोनों बेटों से इस्लाम धर्म को अपनाने के लिए कहा। इतने छोटे होकर भी गुरु गोविंद सिंह के इन दोनों बेटों ने इस्लाम धर्म को कबूल करने से मना कर दिया। जब वजीर खां ने इनसे सिर झुकाने को कहा, तो इसके लिए भी दोनों ने इंकार कर दिया और यह कहा कि हम अकाल पुरख और अपने गुरु पिता के अतिरिक्त किसी और के सामने सिर नहीं झुकाते हैं। हमारे दादा ने जो कुर्बानी दी है, ऐसा करके हम उसे व्यर्थ नहीं जाने देंगे। हमने यदि किसी और के सामने सिर झुका लिया, तो अपने दादा को हम क्या जवाब देंगे। उन्होंने धर्म के नाम पर अपना सिर कलम करवाना उचित समझा, लेकिन झुकाना नहीं।

दीवार में जिंदा चुनवाने का आदेश - इसके बाद भी वजीर खां ने गुरु गोविंद सिंह के दोनों बेटों को काफी धमकाया। उसने इन दोनों को डराने की भी कोशिश की। साथ ही उसने प्यार से भी इन्हें इस्लाम धर्म अपनाने के लिए कहा, लेकिन इसके बाद भी दोनों साहिबजादे अपनी बात पर अड़े रहे। जब वजीर खां ने देखा कि दोनों उनकी बात नहीं मान रहे हैं, तो आखिर में उसने इन दोनों को दीवार में जिंदा चुनवाने का आदेश दे दिया। इसके बाद जब इन दोनों साहिबजादों को दीवार में चुना जाने लगा, तब दोनों साहिबजादे जपुजी साहिब का पाठ करने लगे। साहिबजादों ने धर्म व देश के लिए बलिदान दे दिया, 26 दिसम्बर उनकी निष्ठा को प्रणाम है।

चलो, खोज निकालें...!

पंचतंत्र के बारे में कुछ सवाल पूछे गए हैं। उनके उत्तर चौखाने में फंसे हैं। उन्हें ढूंढिए।

1. पंचतंत्र के रचियता कौन हैं?
2. पंचतंत्र को कितने तंत्रों में बांटा गया है?
3. पंचतंत्र का विश्व की लगभग हर भाषा में .... हो चुका है।
4. पंचतंत्र की कई कहानियों में मनुष-पात्रों के अलावा किन्हें कथा का पात्र बनाया गया है?
5. पंचतंत्र को कौन सी क्षमता विकसित करने का एक सशक्त माध्यम मानते हैं?
6. पंचतंत्र में कुल कितनी कथाएं हैं?

पाँ	च	र	ला	ब	जा	न	ट	चि
आ	ट	लां	टि	क	म	सा	ग	प
शां	क	मी	श	क्क	र	शु	प	क्षी
त	आ	र्क	टि	क	म	सा	ग	त
प	ल	दे	पू	ने	त्व	क्ष	म	ता
स	औ	बे	व	चु	क	के	ल	ष्णु
तां	क	जी	लु	ना	च	पा	पू	व
सी	क	ली	म्बि	पं	त	ष्णु	श	र्मा
र	स	डू	मां	न	री	थ	नी	न
अ	नु	वा	द	द	हा	सा	ग	र

पंडित विष्णु शर्मा, पांच, अनुवाद, पशु-पक्षी, व्यावहारिक क्षमता, सत्तासी

कौन है वो

गोलू बंदर ने कुछ विशेषताएं बताई हैं। उस आधार पर पहचानिए कि वो कौन सा प्राणी है?

उत्तर - गधा

कविता

- बालकृष्ण शर्मा (नवीन)

कौन कहता है कि तुमको खा सकेगा काल ?
अरे? तुम हो काल के भी काल अति विकराल
काल का तब धनुष, दिक् की है धनुष की डोर;
धनु-विकंपन से सिहरती सृजन-नाश-हिलोर!
तुम प्रबल दिक्-काल-धनु-धारी सुधन्वा वीर;
तुम चलाते हो सदा चिर चेतना के तीर!

क्या बिगाड़ेगा तुम्हारा, यह क्षणिक आतंक?
क्या समझते हो कि होगें नष्ट तुम अकलंक?
यह निपट आतंक भी है भीति-ओत-प्रोत!
और तुम? तुम हो चिरंतन अभयता के स्त्रोत!!
एक क्षण को भी न सोचो कि तुम होगे नष्ट,
तुम अनश्वर हो! तुम्हारा भाग्य है सुस्पष्ट!

चिर विजय दासी तुम्हारी, तुम जयी उद्बुद्ध,
क्यों बनो हत आश तुम, लख मार्ग निज अवरुद्ध?
फूँक से तुमने उड़ाई भूधरों की पाँत;
और तुमने खींच फेंके काल के भी दाँत;
क्या करेगा यह बिचारा तनिक सा अवरोध?
जानता है जग तुम्हारा है भयंकर क्रोध!

जब करोगे क्रोध तुम, तब आएगा भूडोल,
काँप उठेंगे सभी भूगोल और खगोल,
नाश की लपटें उठेंगी गगन-मंडल बीच;
भस्म होंगी ये असामाजिक प्रथाएँ नीच!
औ पधारेगा सृजन कर अग्नि से सुस्नान;
मत बनो गत आश! तुम हो चिर अनंत महान!

अपणी शक्ति

नारायणी माया बदेका, उज्जैन

जे जे राम सा। नारी, स्त्री,औरत,महिला नाम तो नरी तरे से लेवाय पन इकी शक्ति एकज है। अपणी शक्ति के पेचान करीके, उको पूरी तरिका से उपयोग करनो। सबसे बड़ी ताकत आपणे ज, जिको एक मजबूत नाम नारी शक्ति।

आज समाज में तरे तरे की प्रवृत्ति चली री है, इको यो मतलब नी के हम सब अपना फरज से हाथ झटकी ला ने, खाली अधिकार की ज बात करा। हर महिला को घर परिवार, समाज, राज्य ने देश का लिये विशेष योगदान होनो चयये। खाली आर्थिक मदद के दान से सब ठीक हुई जाय ऐसो भी नी है, हां उससे मध्यम वर्ग ने निम्न वर्ग में सहायता हुई जाय। पण सहायता ऐसी के कोई सवारथी ने दूसरा पेज निरभर नी हुई जाय।

महिला होने के नाते हमारो सबसे बड़ो योगदान हमारे साथ की हमारे आसपास की, बगर पढ़ी लिखी महिला के साक्षर बनावा की पूरी कोसिस करनी। अपणी कलात्मक रूचि को उपयोग करीके उके समाज में लाणो, ने उके अपणो काम बनय के उससे पूंजी कमाणी ने अपणी जिनगी चलावा के साथे अपणा साथे की कमजोर पड़ती महिला होन को संबल बननो ने, उनके भी आत्मनिर्भर बनने की सीख देनी।

सरकार की मदद तो बखत बखत पे होय, पण हमारी खुद की अंदरूनी शक्ति हमारी पल पल मदद करे और या ऐसी मदद है कि इससे हम पूरी तरे जीवन का भोत सारा उतार चढ़ाव झेली सका, पूरा करी सका। विघन तो आय पण निराश नी होनो। हर महिला सृष्टि की रचना की कड़ी होय इसलिए खुद की रचनात्मक पेचाण जरुर राखनी। काठ की वस्तु बने की पीली माटी से घर सजावट को सामान। नवा जुना कपड़ा से बिछावा की चटय, सतरंजी बने के पग पूछ्वा का आसण। घर में दीवाली दसेरा पे माँडना बने के ब्याव में वपराता देवा लेवा का सामान जसे की कंकु की चंगेरणी, रूई की बाती की डबली। ऐसो कोय काम नी जो महिला करी नी सके। मेंदी मांडना, देवा लेवा का साड़ी कपड़ा की भोत सुंदर सजावट करी के और भी खबसूरत करी देनो। घर की छोटी छोटी क्यारी में फूल उगय के घर का आंगणा में साग भाजी आमला उगय के अपणी जरुरत की पूर्ति हुई सके। एकजुट हुई के यो काम और सरल हुई सके। अपणो बखत भी अच्छो निकले ने आर्थिक मदद भी मिले। हाँ केनो ने लिखनो भोत आसान है, पण हम महिला हिमत करा तो सब संभव हुई जाय। समाज के लिए हर महिला प्रेरणा बने। दबाव तो हर ओर से अय सके पण अपनी इच्छा शक्ति काठी राखणी। फिर से एक बात के अधिकार से जादा हमारो समाज ने देश के प्रति कर्तव्य भोत जरूरी है और नारी शक्ति का योगदान से घर परिवार, समाज देश को उत्थान जरुरी है। नारी है सृष्टि को आधार इका बिना सूनो जग संसार।

"भारत महान प्रश्नोत्तरी"

1. मदन मोहन मालवीय जी का जन्म कब हुआ था?

2. मदन मोहन मालवीय जी को कौनसी उपाधि प्राप्त थी?

3. मदन मोहन मालवीय जी ने किस विश्वविद्यालय की था ?

उत्तर - 1. 25 दिसंबर 1861, 2. महामना, 3. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

किसान भाई, जैविक खाद की पूर्ति गोबरखाद, हरीखाद, केंचुआ (वर्मी कंपोस्ट) खाद, तरल जैव घोल के साथ ही 'जीवामृत' बनाकर की जा सकती है।

गोबर खाद - अच्छे सड़े हुए (पके हुए) गोबर के खाद में 1 से 1.5 प्रतिशत नाइट्रोजन, 1-2 प्रतिशत फासफोरस तथा 1-1.5 प्रतिशत तक पोटाश पाया जाता है। इसकी मात्रा खेत में 10-15 टन प्रति हैक्टेयर दी जानी चाहिये। किसान के पास जो भी उपलब्ध हो वह देकर शेष तत्वों की पूर्ति रसायनिक खाद से करो गोबर खाद जल धारण क्षमता बढ़ाती है। मृदा स्ट्रक्चर में सुधार होता है।

हरीखाद - हरीखाद मूंग, लोबिया, सनई ढेंचा से दी जाती है। इन फसलों को उगाकर फूल आने पर मिट्टी पलटने वाले हल से पलटकर मिट्टी में दबा देने से वह सड़कर खाद बन जाती है।

केंचुआ खाद - सुविधानुसार 10×5, 7.5×5 या 5×5 फिट आकार के चौरस शेड ईंटों से बनाकर उनमें केंचुए पाले जाते हैं। केंचुआ गोबर कच्चा ताजा खाते हैं। अतः शेड को गोबर से भर देते हैं 1.5 से 2 माह में केंचुआ समूह गोबर को खा-खा कर चायपत्ती जैसा बारिक कर देते है तब उस पदार्थ को छानकर बोरी में भरकर एकत्र कर लें। बाद में फलों के पौधों एवं सब्जियों में पौधे की उम्रनुसार 4-6 मग या मुट्ठी भरकर देकर खुरपी से मिला दें। तरल जैव घोल - इफको, कृभको, एनएफएल फर्टिलाइजर निर्माता कंपनियां पी.एस. बी. 12:32 जैविक तथा अन्य कल्चर के साथ ही आदि केन्द्रों से समितियों से विक्रय करती हैं। इनको पानी में 1 लीटर से 100 लीटर पानी घोलकर स्प्रे कर दें।

जीवामृत बनाकर - जीवामृत बनाने हेतु एक 200 लीटर के ड्रम में 10 किलो गोबर 10 लीटर गोमूत्र 1.5 किलो बेसन, 1.5 किलो गुड़ तथा 1-2 किलो खेत की मिट्टी डालकर पानी से भरकर गले तक रखें। ड्रम को 7-8 दिनों तक लकड़ी से 5 मिनट रोज घड़ी की दिशा में हिलाएं। मैंने स्वयं अनेक बार बनाकर ड्रिप द्वारा फल के पौधों में दिया है जबरदस्त लाभ हुआ है। मैंने उक्त सभी के अलावा सरसों की खली भी 1 किलो प्रति ड्रम डाली थी । वेस्ट डिकंपोस्ट भी मिलाकर जीवमृत ड्रिप न हो तो बाल्टियों 1-2 से भी दे सकते है। यह शीघ्र 8-10 दिनों में तैयार करके दिया जा सकता है।

अतः किसान भाइयों उपरोक्त में से कोई भी पसंद अनुसार सुविधानुसार खेत में पौधों में डालकर लाभ लें।

जैविक कीटनाशक - जैविक कीटनाशक अनेक पदार्थों को मिलाकर बना सकते हैं जैसे -

1. नीम पत्ती व निबोंली को उबालकर पानी को आधा हो जाने तक उबालकर, छानकर बोतल में भरकर रख लें।
स्प्रे पंप में 100-125 मि.ली डालकर स्प्रे करें, कीड़े मर जायेंगे।

2. नीम-निबोंली के साथ ही करंज की पत्तियां डालकर उबालकर भी बना लें। उसमें कुछ पत्तियां जर्दे की भी डाल ले। बन जाने पर स्प्रे करें।

3. गोमूत्र - ताजा गाय का मूत्र 100 लीटर से 125 लीटर प्रति टंकी डालकर स्प्रे करें, लाभ होगा।

4. नीम, सीताफल, करंज, धतूरा, आइपोमिया (बेशरम), अरंडी सभी पौधों के पत्तों में कीटनाशक गुण होता है। अतः किसान भाई उपलब्धता अनुसार पत्तों को उबालकर कीटनाशक बना लें। 100-125 लीटर (कीड़ों संख्या अनुसार गाढ़ा) प्रति टंकी डालकर स्प्रे करें निश्चित ही कीड़े मरेगें।

5. नीम पत्ती, करंज पत्ती के साथ जर्दा-चूना तथा सड़ी छाछ (तांबे या पीतल के बर्तन में 1-2 दिन रखकर) डालकर भी कीटनाशक बनाकर स्प्रे करने पर फायदा हुआ है।

बच्चों को क्रिसमस पर सांता क्लोज बनाने से पहले यह जान लीजिए

अथर्व पंवार, पत्रकार

प्रति वर्ष 25 दिसम्बर को एक अंग्रेजी त्यौहार क्रिसमस मनाया जाता है । यह एक ऐसा दिन है जिसे पश्चिम सभ्यता की ओर ले जाने वाले एक कारक के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इस दिन जहाँ आमजन चर्च में मोमबत्तियां लगाने जाता है तो वहीं स्कूल-कॉलेज में इसे बच्चों के एक विशेष उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन बच्चों को विशेषकर सांता क्लोज बनाया जाता है लाल कपड़े, सफेद दाड़ी और लाल टोपी के आवरण से बच्चों को ढांक दिया जाता है, वह भी मात्र इस मान्यता से की जो सांता क्लोज होता है वह बच्चों का प्यारा होता है और वह उनके लिए उपहार लेकर आता है । माता-पिता अपने बच्चों को सांता क्लोज बना कर इसे एक अद्भुत कार्य समझते हैं।

सांता क्लोज कौन था, उनका क्या इतिहास था, ईसाई धर्मान्तरण क्या है इत्यादि बातों से अनजान आमजन किसी अन्य की देखादेखी में, स्कूल में अनिवार्यता और पश्चिम की संस्कृति की प्रबलता के कारण ऐसा कार्य करता है। इसीलिए क्रिसमस पर सांता क्लोज बनने और बनाने से पहले हमें वास्तविकता से परिचय कर लेना चाहिए। असल में सांता क्लोज ईसाई बिशप निकोलस को कहा जाता है। इन्हें बच्चों, महिलाओं और शोषित-वंचित लोगों का मसीहा माना जाता है, पर यह वास्तविकता नहीं है। कई लोगों का ऐसा मानना है कि निकोलस जैसा कोई व्यक्ति इतिहास में नहीं था, इसका कारण है कि 283 ए डी में जन्मे व्यक्ति का छठी शताब्दी तक कोई दस्तावेज नहीं था पर 6 से 8 वीं शताब्दी में इनका काफी प्रचार-प्रसार होने लगा। जिससे पूरा यूरोपीय विश्व अछूता न रहा।

कई आलेखों और ऐतिहासिक दस्तावेजों की मानें तो निकोलस एक मूर्तिभंजक (मूर्तियों को तोड़ने वाले) व्यक्ति थे। उन्हें लगता था कि मूर्तियों में शैतान रहता है इसीलिए वह मूर्तियाँ तोड़ते थे। ऐसे भी दावे किए जाते हैं कि उन्होंने **pagons** (मूलनिवासी जो मूर्तिपूजा करते थे) के मंदिर भी तोड़े थे। समय के साथ निकोलस की चर्चा पूरे यूरोप में फैलने लगी। यह चरित्र (बिशप निकोलस) शुरूआती दौर में बच्चों को डराने के रूप में उपयोग में लिया जाता था। ऐसा माना जाता था कि निकोलस बुरे बच्चों को अँधेरे जंगल में ले जाएगा इसी काल में ऑस्ट्रिया में क्रिसमस के दिन पादरी उस दिवस का विशेष परिधान पहनकर लोगों के घर जाते थे और बच्चों को रॉड से पीटने की धमकी भी देते थे। जर्मनी में इन्हें(निकोलस को) क्नेच रुप्रेक्ट के साथ जोड़ा जाता था जो शरारती बच्चों को खा जाने की धमकी देता था। 16 शताब्दी में प्यूरिटन (शुद्धतावादी जिन्होंने ईसाई धर्म की कुप्रथाओं का विरोध किया था) ने भी सांता क्लोज और क्रिसमस पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की थी।

सांता क्लोज के प्रचार-प्रसार का श्रेय डच लोगों को जाता है। उन्होंने निकोलस को 'सिंटरक्लास' से जोड़ दिया और उसका महिमामंडन आरंभ हो गया। यही सिंटरक्लास बाद में अमेरिका के सांता क्लोज में परिवर्तित हो गया। आज हम जो सांता क्लोज को देखते हैं वह सन 1823 में एक अंग्रेजी कविता "twas the night before Christmas" के माध्यम से अंग्रेजी संसार में प्रचारित हो गया बाद में अनेक बड़ी कंपनियों ने गीतों और अन्य संचार माध्यमों का प्रयोग करके इसे एक मार्केटिंग टूल के रूप में प्रचारित किया था। आज हम हमारे बच्चों को वह व्यक्ति बनाने पर तुले हैं जिसका इतिहास असुरी प्रवृत्ति का रहा है। प्रपंचों से हमारे बीच इसकी एक कोमल छवि बना दी गई है, पर वास्तविकता में यह सांता क्लोज तो कुल्हाड़ी से मूर्तियाँ और मंदिर तोड़ने वाला एक क्रूर ईसाई बिशप था। जहाँ हमारी संस्कृति में बालगणेश, बालकृष्ण, प्रहलाद, अभिमन्यु, अरुणी इत्यादि शिक्षाप्रद और सात्विक पौराणिक पात्र हैं, उन्हें भूलकर हम अपने बच्चों का तामसिक पोषण कर रहे हैं। बालपन में ही अपनी संस्कृति से दूर ले जाने का कार्य यह सांता क्लोज कर रहा है, जो समय के साथ बढ़ता जाता है, जो कहीं न कहीं मैकाले की उस परिकल्पना को साकार करने का प्रथम चरण है जिसमें उसका मानना था कि उसे पूरे भारत की संस्कृति का विनाश कर के इसे ईसाई राष्ट्र बनाना है। तन से भले ही सभी हिन्दू हों पर मन से हिन्दू बनने की ओर ध्यान देना होगा और इसके प्रयास बाल्यावस्था से ही करने होंगे।

भारत की जनजातीय आध्यात्मिकता से परिचय कराती फिल्म कांतारा

सनी राजपूत, उज्जैन

कुछ ही दिनों पहलें कन्नड़ भाषा में बनी फिल्म कांतारा का प्रदर्शन हुआ जिसे हिंदी भाषा में भी डब किया गया है। इस फिल्म में भारत की जनजातीय संस्कृति और परंपरा को बहुत ही बेहतर ढंग से फिल्माया गया है। जो देखने में स्वभाविक के साथ ही वास्तविक भी लगता है। फिल्म में बताया गया है कि किस प्रकार राज्य का राजा अपने भीतर की अशांति और व्याकुलता को समाप्त करने के लिए वन में जाता है और उस वन में राजा को उस देवता के दर्शन होते हैं, जिन्हें वन में रहने वाले वनवासी पूजते हैं। राजा की प्रार्थना पर वनवासी प्रजा देव को राजा के द्वारा ले जाने की स्वीकृति प्रदान करते हैं। किन्तु देवता स्वयं मानव शरीर में आकर वनवासियों के लिए वनभूमि और उनकी सुरक्षा का वचन लेते हैं। अर्थात् देवता स्वयं राजा और वनवासी प्रजा के मध्य न्याय के लिए प्रकट होते हैं।

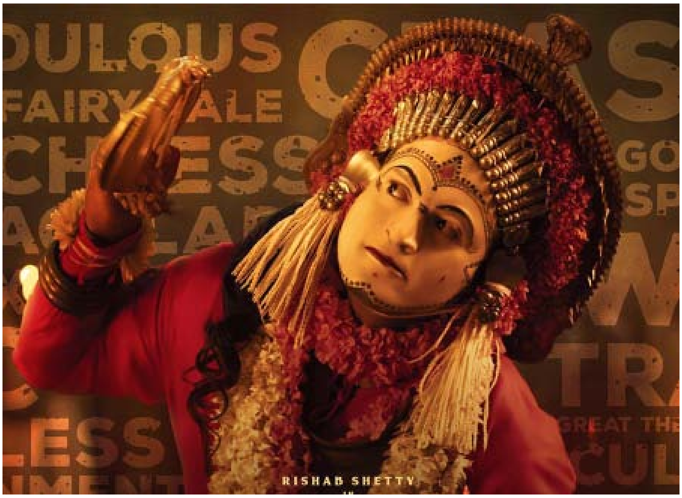

भारत के भीतर जनजाति समाज में यह देखने के लिए अवश्य मिलता है। जिसमें जनजातीय समाज के द्वारा पूजे जाने वाले देवी-देवता मानव शरीर धारण कर सभी प्रकार के निर्णय-दिशा निर्देश आदि सभी कुछ प्रदान करते हैं। जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया जाता है। कांतारा में भी यह बतलाने का सफल प्रयास किया गया है। वर्ष में एक बार निश्चित समयावधि में जनजाति समुदाय के द्वारा अपने क्षेत्रों में ऐसे उत्सवों को मनाया जाता है। कुल देवी की पूजा तथा लोक देवताओं को पूजने की परम्परा भारत के जनजाति वर्ग में प्रारंभ से विद्यमान है। कांतारा में भी कोला उत्सव के माध्यम से उस परम्परा को दिखाया गया है। जिस प्रकार मालवा के उज्जैन में महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग की सावन की सवारी होती है या जगन्नाथ पुरी में भगवान की रथयात्रा होती है। जिसमें वर्ष में एक बार भगवान मंदिर से बाहर आकर भक्तों को दर्शन देते हैं और उनका कल्याण करते हैं। उसी प्रकार कांतारा में कोला उत्सव को दर्शाया गया है, जिसमें राजा के द्वारा ले जाए देव की प्रतिमा वर्ष में एक बार वनवासी प्रजा को दर्शन देने के लिए वन में प्रवेश करती है। जिसे उत्सव के रूप में मनाया जाता है। भारत में क्षेत्रीय भिन्नता होने के साथ ही सांस्कृतिक एकरूपता देखने के लिए मिलती है। शहरी क्षेत्र में निकलने वाली भगवान की सवारी या रथयात्रा हो या जनजातीय क्षेत्रों में स्थानीय एवं लोक देवी-देवता की सवारी हो, सभी कुछ सांस्कृतिक एकरूपता के जीवंत उदाहरण है। इसी के साथ कुल देवी पूजन की परंपरा संपूर्ण भारत में सभी वर्गों में समानरूप से विद्यमान है।

इसी के साथ जनजाति क्षेत्रों में लगने वाले मेले एवं वीरता और शौर्य का प्रतीक खेल 'कंबाला' को भी कांटारा में बहुत बेहतर ढंग से दिखाया गया है। कांतारा में वर्ष 1970 से लेकर 1990 के बीच हो रहे परिवर्तन को भी दिखाया गया है। 1990 में आरक्षित वनों का निर्माण किया जा रहा है। जिसमें वनविभाग को जनजातीय समाज में सहमति की जिम्मेदारी दी गयी है। राजा के वर्तमान वंशज के भीतर का स्वार्थ जागता है और वनवासियों और वनविभाग के बीच भ्रम फैलाते हुए षड्यंत्र रचने लगता है। किन्तु स्थानीय देव, फिल्म के नायक के शरीर को धारण कर कोला उत्सव में सभी को एक साथ लाकर शपथ दिलाते हैं। तथा वनवासियों एवं वनविभाग के मध्य समन्वय स्थापित कर अंतरध्यान हो जाते हैं। फिल्म के अंतिम दृश्य में आध्यात्मिकता की श्रेष्ठता को बतलाने का अभूतपूर्व प्रयास किया गया है, जिसमें संकेतों में बताया गया है कि

"यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥"

प्रवासी समुदाय को धर्म-परिवर्तन से रोकने व नशा-मुक्ति तथा अपने समाज को मुख्यधारा में लाने के प्रयास करने चाहिए

प्रवासी समुदाय मालवा प्रांत द्वारा खंडवा में विभाग संत समाज समागम में संत श्री गोपाल चैतन्य महाराज ने प्रवासी समुदाय को संगठित होकर, शिक्षा पर ध्यान देकर अपने समाज को अन्य समाज की तरह मुख्यधारा में लाने का आग्रह किया।

आगे महाराज श्री ने कहा कि प्रवासी समाज में हो रहे धर्म परिवर्तन नहीं होना चाहिए, समाज में नशा मुक्ति के लिए निरंतर प्रयास होना चाहिए एवं हमारी सामाजिक कुरीतियों को हमें दूर करना चाहिए।

साथ ही महाराज श्री ने बंजारा समाज के सभी जाति बिरादरी के प्रमुख एवं गांव के पटेल लोगों को जामनेर में हो रहे बंजारा समाज के महाकुंभ की सूचना दी एवं वहां आने का आग्रह किया। विदित हो कि बंजारा समाज का अखिल भारतीय सम्मेलन जलगांव के ग्राम गोदरी में 25 से 30 जनवरी के मध्य होने जा रहा है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संघ के सरसंघचालक मोहनराव जी भागवत रहेंगे। आयोजन प्रवासी समाज खंडवा विभाग की योजना अंतर्गत हुआ।

संविधान दिवस पर अधिवक्ता परिषद ने आयोजित किए न्याय शिविर

शानदार पहल - संविधान दिवस के उपलक्ष्य में अधिवक्ता परिषद मालवा प्रान्त व उच्च न्यायालय द्वारा इंदौर के 11 स्थानों पर 'न्याय शिविर' का आयोजन किया गया।

इन न्याय शिविरों में वकीलों ने सामान्य जनों को विधिक और प्रशासनिक समस्याओं पर सभी तरह की विधिक सलाह दी।

इन 'न्याय शिविरों' में बड़ी संख्या में सामान्य जन पहुंचे, जिन्हें वकीलों ने उनकी समस्याओं पर परामर्श दिया। नागरिकों ने इस प्रकार के प्रयास का अभिनंदन किया।

न्याय शिविर में शहर के सभी विधि कॉलेज के विद्यार्थियों ने भी सहभागिता की। सभी सहभागियों कों अधिवक्ता परिषद मालवा प्रांत द्वारा प्रशस्ति पत्र भेंट किए गए।

आईआईटी इंदौर के शोध में चौंका देने वाला खुलासा हुआ है, हरे कृष्णा के मन्त्र का 108 बार जाप करने से मिलती है मन को शान्ति

मध्य प्रदेश स्थित इंदौर आईआईटी के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग ने एक शोध किया है। शोध के जरिए यह निष्कर्ष निकला है कि हरे कृष्ण मंत्र का 108 बार जाप करने पर मन शांत होता है व तनाव से मुक्ति मिलती है। शोधकर्ता टीम ने इस पूरे प्रशिक्षण को करने के लिए 37 लोगों का चयन किया था और उनके मस्तिष्क से निकलने वाली ईईजी सिग्नल रिकॉर्ड कर उन पर शोध किया गया।

इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरी विभाग ने इस शोध में 37 लोगों को चिन्हित किया और उन पर शोध किया। शोध के दौरान हरे कृष्ण महामंत्र जाप करवाया गया। इस दौरान शोध करने वाली टीम ने हरे कृष्ण महामंत्र का जाप करने वाले व्यक्तियों का पहले मस्तिष्क का अवलोकन किया और उसके बाद जाप के बाद उनके मस्तिष्क का अवलोकन किया। इस दौरान जाप के बाद मस्तिष्क काफी शांत और तनावमुक्त नजर आया।

जनजाति विकास मंच बड़वानी द्वारा खंडवा में राहुल गांधी के संघ पर दिए गए असत्य भाषण के विरोध में ज्ञापन सौंपा गया

मध्यप्रदेश के खंडवा जिले में कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा के दौरान आयोजित सभा मे कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा भाषण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे राष्ट्रभक्त संगठन को बदनाम करने की नीयत से यह झूठा आरोप लगाया कि संघ ने 'टंट्या मामा' और भगवान 'बिरसा मुंडा' को फांसी पर चढ़ाने में अंग्रेजों की मदद की थी। जबकि ऐतिहासिक सत्य यह है कि अंग्रेजों ने टंट्या मामा को सन् 1889 में फांसी दी तथा बिरसा मुंडा को सन् 1900 में धोखे से मरवाया, जबकि 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की स्थापना इन महापुरुषों के बलिदानों के कई वर्ष वर्ष बाद यानी सन् 1925 में हुई थी।

जनजाति विकास मंच ने अपने ज्ञापन में आगे कहा कि -राहुल गांधी द्वारा यह पहली बार नहीं अपितु पूर्व में भी संघ को बदनाम करने और जनजाति समाज को भ्रमित, मतभेद पैदा करने वाली बयानबाजी कर चुके हैं। पूर्व में संघ पर गलत टिप्पणी को लेकर भी सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें फटकार लगाकर आवश्यक निर्देश भी दिए थे, जिसका उल्लेख समाचार पत्रों में भी हुआ था और राहुल गांधी ने माफी भी मांगी थी। इससे स्पष्ट है कि राहुल गांधी द्वारा जानबूझकर बार-बार राष्ट्र निर्माण में संकल्पित ' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ' को बदनाम करने का षड्यंत्र रचते रहते हैं। ज्ञापन में जनजाति विकास मंच के कार्यकर्ता व समाजजन बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

झाबुआ के 38 परिवारों के 184 ग्रामीणों ने की घर वापसी पुन: अपनाया सनातन धर्म, किसी कारण से हो गए थे ईसाई

मध्यप्रदेश में झाबुआ जिला मुख्यालय से 17 किमी दूर स्थित कल्याणपुरा में सोमवार को ईसाई धर्म अपना चुके 38 परिवारों के 184 ग्रामीणों ने सनातन धर्म अपनाते हुए वैदिक रीतियों के साथ घर वापसी की। सभी परिवार 24 गांवों के निवासी हैं और गरीबी के चलते प्रलोभन में आकर उन्होंने मतांतरण कर लिया था। विश्व हिंदू परिषद के प्रयासों से उनकी घर वापसी संभव हो पाई है।

कल्याणपुरा के हायर सेकंडरी स्कूल के खेल मैदान में विहिप की मालवा प्रांत शाखा ने कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें परिषद के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार विशेष रूप से उपस्थित हुए। इस दौरान हवन-पूजन के साथ ही समस्त आयोजन वैदिक परंपरा के अनुसार किए गए। आलोक कुमार और गो-रक्षा प्रमुख सोहन विश्वकर्मा ने ग्रामीणों का स्वागत किया। उनके समक्ष मतांतरित हुए ग्रामीणों ने मूल धर्म को अंगीकार करते हुए कहा कि मजबूरी के चलते उनसे गलती हो गई थी, जो उन्होंने अब सुधार ली है। बता दें कि ग्रामीणों को मतांतरण के लिए रुपये, सामान, इलाज का लालच दिया जाता है।

अच्छा नहीं लग रहा था - सोमवार को घर वापसी करने वाले रामचंद सिंगाड़, पारू भूरिया, सुन्नोबाई, अन्नू भूरिया, किड़ीबाई, प्रकाश डामोर, कालू डिंडोर व रामसिंह वास्केल का कहना था कि वे मतांतरित जरूर हो गए थे, लेकिन उन्हें कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। अब वे अपनी जड़ों की ओर लौट आए हैं।

इन्दौर में रामराज्य और भारतीय संविधान पर संपन्न हुआ चिंतन यज्ञ

डॉ हेडगेवार स्मारक समिति द्वारा 'रामराज्य और भारतीय संविधान' विषय पर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में जनहित याचिकाओं के लिए प्रसिद्ध सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय जी ने संबोधित किया।

अश्विनी उपाध्याय जी ने अपने व्याख्यान में कानून की आवश्यकताओं, सबके लिए समान शिक्षा तथा जनसंख्या असंतुलन की चुनौती जैसे विषयों पर तर्कपूर्ण संबोधित किया।

श्री उपाध्याय ने कहा कि जनप्रतिनिधि को कानून निर्माता कहा गया है, इसलिए समाज की भी जिम्मेदारी है कि उनसे देशहित के कानून बनवाए।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में संतवृंद, सामाजिक कार्यकर्ता व प्रबुद्ध नागरिक सज्जन उपस्थित रहे।

मालवा-निमाड़ में धूमधाम से मना जनजातिय गौरव दिवस

देवास में जनजाति गौरव दिवस के अवसर पर सर्व समाज द्वारा
विशाल सभा एवं चल समारोह का आयोजन किया गया।

जनजाति गौरव दिवस के शुभ अवसर पर अभाविप बड़वानी
द्वारा शोभा यात्रा आयोजित की गई ।

जनजाति विकास मंच द्वारा इंदौर के लालबाग पैलेस में जनजाति गौरव दिवस पर
आयोजित कार्यक्रम में 'जनजातीय संस्कृति' की झलक

जनजाति गौरव दिवस पर कन्नौद में विशाल
चल समारोह एवं सभा का आयोजन हुआ।

आमू आखा एक छे.....
झाबुआ में जनजातीय गौरव दिवस का उल्लास

पातालपानी से गुजरने वाली ट्रेनें, स्वतंत्रता संग्राम के महानायक टंट्या मामा को सलामी देने के लिए दो मिनट रुकती है।

जनवरी माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

- ता. ०२ बैकुण्ड एकादशी
- ता. १२ स्वामी विवेकानंद जयंती
- ता. १४ मकर संक्रांति
- ता. १९ प्रदोष व्रत
- ता. २१ मोनी अमावस्या
- ता. २६ गणतंत्र दिवस

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341